an>

Title: Need to accord classical language status to Marathi language.

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण) : केन्द्र सरकार द्वारा अभी तक तमिल, संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम तथा ओड़िया इन छः भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। यह दर्जा प्रदान करते समय केन्द्र सरकार ने निम्नलिखित बातों पर गौर किया:

1. भाषा की प्राचीनता;

2. भाषा की मौलिकता तथा निरंतरता;

3. स्थापित भाषायी और साहित्यिक परंपरा;

4. प्राचीन भाषा और उसके आधुनिक स्वरूप के बीच की दूरी सहित उनके बीच का संबंध/रिश्ता।

इन सभी मानकों को पूरा करने के बावजूद भी मराठी को आज तक शास्त्रीय भाषा का दर्जा हासिल नहीं हो सका है। प्राचीन महाराष्ट्री, मरहट्टी, महाराष्ट्री प्राकृत भाषा, अपभ्रंश मराठी भाषा से विकसित आज की आधुनिक मराठी भाषा, ऐसा मराठी का सफर रहा है जो आज भी उपलब्ध है। ऐसा मराठी का पहला ग्रंथ "गाथासप्तशती " 2000 वर्ष पुराना है। लीलावस्तू और ज्ञानेश्वरी यह ग्रंथ मराठी भाषा काफी विकसित होने के बाद लिखे गए ग्रंथ हैं, लेकिन उसका विकास होने में भी कई सौ साल लगे थे। नाणेघाट में पाए गए ब्राह्मी लिपि में लिखित 2200 वर्ष पुराने शिलालेखों में पाया गया महाराष्ट्रीनों का उल्लेख; हाल सातवाहन की गाथा सप्तशती का उच्चतम स्तर का मराठी काव्य,रामायण, महाभारत और गुणाढ्या की बृहतकथा में आने वाले अनगिनत मराठी शब्द; वररूची के प्राकृत प्रकाश, हेमचन्द्र की देशीनाममाला, शाकुंतल मृच्छाकटिकम् में अनेक पात्रों के द्वारा बोले गए मराठी संवादों से यह साबित होता है। अश्मक, कुंतल, अपरान्त विदर्भ इन प्रदेशों में प्राकृत महाराष्ट्री पूवतन में थी। सन 1290 में तमिलनाडु जैसे प्रदेश में भी मराठी सिखाने की व्यवस्था की गई थी, ऐसा मैसूर प्रान्त के मैतंगी में प्राप्त शिलालेखों में बताया गया है। मुकुंदराजा द्वारा लिखित "विवेकसंधू " मराठी ग्रंथ की रचना 1110 में की गई थी। पतंजलि, कौटिल्य, टॉलमी, वराहमिहिर, चीनी प्रवासी ह्यूनत्संग, अलबरूनी इनके द्वारा किए गए लेखन से और किए गए अनुसंधान से यह स्पष्ट दिखाइ देता है कि मराठी भाषा 2500 वर्ष पुरानी है। छत्रपति शिवाजी महाराज ने भी मराठी को राजभाषा घोषित करके राजभाषा कोष का निर्माण किया था। महाराष्ट्र सरकार ने भी गहन अनुसंधान करने के पश्चात ही मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान करने हेतु केन्द्र सरकार से 2013 में अपनी मांग रखी।

प्रतिवेदन में उल्लिखित अनुसंधान से मराठी भाषा की प्राचीनता, मौलिकता, निरंतरता, स्थापितता तथा उसके आधुनिक स्वरूप और उनके बीच का संबंध निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है और इसीलिए केन्द्र सरकार द्वारा मराठी भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा बिना किसी विलंब के प्रदान किया जाए।